भिण्डी (OKRA OR LADY'S FINGER)

सम्पूर्ण भारतवर्ष में भिन्डी की खेती अपने अपरिपक्व फल के लिये की जाती है, जो कि सब्जी के रूप में प्रयोग की जाती है।

भूमि :– भिण्डी की खेती के लिए हल्की दोमट, मिट्टी उपयुक्त होती है। भिण्डी जल–जमाव बर्दाश्त नही करती है। अतः जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए। भिण्डी की खेती दोनो मौसमों में (गर्मा फसल तथा बरसाती फसल के रुप में) होती है।

उन्नत किस्में:– पूसा ए.4, परमानी क्रांति, पूसा सावनी, वैशाली वधू, पंजाब पद्मिनी, अर्का अनामिका, अर्का अभय, परभनी क्रांति, आजाद क्रांति वर्षा उपहार इत्यादि।

बोने का समय:– गर्मा फसल :– जनवरी – फरवरी
बरसाती फसल :– जून – जुलाई

लगाने की विधि :– खेत की जुताई कर अच्छी तरह तैयार कर लेते हैं। खेत तैयार करते समय ही खाद तथा उर्वरक देकर मिट्टी में मिला देते हैं। इसके पश्चात छोटी–छोटी क्यारियाँ बना लेते हैं। तैयार क्यारी की समतल जमीन में भिण्डी के बीज को पंक्तियों में बोते हैं।

बीज बोने की दूरी: गर्मा फसल : कतार से कतार : 45 सें0मी0
पौधा या बीज से बीज : 20 सें0मी0
बरसाती फसल : कतार से कतार : 60 सें0मी0
बीज से बीज : 25-30 सें0मी0

बीज दर (किलो प्रति एकड़): गर्मा फसल :7-8 किलो प्रति एकड़, बरसाती फसल:3-4

खाद तथा उर्वरक की मात्रा (प्रति एकड़):–

गोबर खाद : 80–100 क्विंटल,

यूरिया : 80 किलो

सिंगल सुपर फास्फेट :120 किलो,

म्यूरियेट ऑफ पोटाश : 40 किलो

खेत की तैयारी करते समय, बीज बोने के पहले पूरी गोबर खाद, पूरा सिंगल सुपर फास्फेट, पूरा म्यूरियेट ऑफ पोटाश तथा यूरिया की आधी मात्रा डालें। यूरिया की बाकी आधी मात्रा निकाई–गुड़ाई करते समय दें तथा पौधों की पंक्तियों पर मिट्टी चढ़ा दें।

सिंचाईं:– आवश्यकतानुसार 5–7 दिनों पर सिंचाईं करें।

उपज : 60 – 80 क्विंटल प्रति एकड़

पौध संरक्षण : कीट

1) फल बेधक/शीर्ष छेदक : इसके पिल्लू फल या शीर्ष पर पत्ती के जुड़े हुए स्थान पर छेद बनाकर घुस जाते हैं प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता।

रोकथाम : इन्डोक्साकार्ब 15.8 एस.एल. 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2) सफेद मक्खी : ये कीट बहुत ही छोटे होते हैं जो स्पर्श मात्र से उड़ जाते हैं। ये मक्खियाँ विषाणु जनित रोग फैलाती हैं।

रोकथाम : इमिडाक्लोरपिड 17.8 एस.एल. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।

3) पत्ती फुदका : इसके शिशु एवं वयस्क पत्तियों पर चिपककर रस चूसते हैं। अधिकता में पत्तियों पर छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते हैं ये विषाणु भी फैलाते हैं।

रोकथाम : बुप्रोफेन्जिन 5% का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग एवं रोकथाम

1) पीतशिरा मोजैक : पत्तों की शिराएं चमकीली एवं पीली होना, उग्रता की अवस्था में पूरी पत्ती तथा फलों का पीला पड़ना।

रोकथाम : 1) रोग ग्रसित पौधों को नष्ट कर देना।

2) रोग प्रतिरोधी किस्में अर्का अनामिका, अर्का अभय की खेती करना, सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोरपिड का छिड़काव करना।

2) पाउडरी मिल्ड्यु : पत्तियों की निचली सतह पर सफेद मटमैले पाउडरनुमा फफूंद की उपस्थिति।

रोकथाम : सल्फेक्स 2.5 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3) पत्ती धब्बा : पत्तों के निचली सतह पर काजल के समान काले फफूंद की उपस्थिति एवं उग्रता की स्थिति में पत्तियों का पीला पड़ना/झड़ना।

रोकथाम : कार्बेन्डाजिम (50%) का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।